

डॉ. लेस्ली एलन, यहजेकेल , व्याख्यान 17, एदोम का भाग्य

बनाम इस्राएल का भविष्य, यहजेकेल 35: 1-36:15

© 2024 लेस्ली एलन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 17 है, एदोम का भाग्य बनाम इस्राएल का भविष्य। यहजेकेल 35:1-36:15.

अब हम पुस्तक के पांचवें भाग के मध्य में हैं, मेरा अनुमान है, जो अध्याय 33 से शुरू हुआ और अध्याय 37 के अंत तक चलेगा।

इस बार, हम 35:1 से लेकर अध्याय 36:15 के आधे भाग तक के भाग का अध्ययन करने जा रहे हैं। और मैं इसे एदोम का भाग्य बनाम इस्राएल का भविष्य कहता हूँ। अध्याय विभाजन की ईसाई परंपरा में, इस भाग को दो अध्यायों, 35 और 36, यानी 36 का पहला भाग, में विभाजित किया गया है। यह वास्तव में एक एकल साहित्यिक इकाई है।

जैसा कि हम बता सकते हैं, हम 35:1 में इसका प्रमाण पा सकते हैं, और हमें भविष्यसूचक संदेश प्राप्त करने का सूत्र मिलता है: प्रभु का वचन मेरे पास आया, और हम अगला प्राप्त करने जा रहे हैं। 36:16 में, प्रभु का वचन मेरे पास आया। और इसलिए, 35:1 से लेकर 36:15 तक एक साथ हैं। अध्याय 35 वास्तव में एदोम के विरुद्ध निर्देशित एक संदेश है।

और हम सोच सकते हैं कि यह यहाँ क्या कर रहा है। इसे अध्याय 25 से 32 में विदेशी संदेशों के संग्रह में क्यों शामिल नहीं किया गया? वास्तव में, वहाँ, उस संग्रह में 25:12-14 में एदोम के खिलाफ एक संदेश था। उस स्थान पर, आरोप 587 में यरूशलेम पर कब्जा करने में बेबीलोनियों का एदोमियों द्वारा समर्थन करने से संबंधित था। एदोम को यहाँ माउंट सेइर कहा गया है, जो यहूदा के दक्षिण-पूर्व और मृत सागर के दक्षिण में पहाड़ी क्षेत्र का भौगोलिक नाम है।

यहीं पर एदोमी लोग रहते थे। अध्याय 35 में, आरोप केवल 587 के बारे में नहीं है; यह यहूदा के दक्षिणी क्षेत्रों पर एदोमियों के कब्जे के बारे में भी है, जब यहूदा की हार हुई थी और कई लोगों को बेबीलोन में निर्वासित कर दिया गया था। इसलिए, एदोम के खिलाफ यह संदेश अध्याय 35 में दिए गए संदेश से बाद की अवधि का है।

लेकिन इसे वहाँ क्यों नहीं रखा गया? इसका उत्तर यह है कि 35 से 36:15 तक में दो विपरीत संदेश हैं जिन्हें जानबूझकर एक साथ रखा गया है। पहला एदोम के खिलाफ न्याय का संदेश और फिर इस्राएल के लिए उद्धार का संदेश। पहला दूसरे के लिए एक बाधा है।

अध्याय 35 इस मोड़ पर 36:1-15 के कारण मौजूद है, 36:1-15 के लिए। यह क्रॉसिंग ट्रैफ़िक के लिए लाल बत्ती की तरह है जो आगे बढ़ते ट्रैफ़िक के लिए हरी बत्ती से मेल खाती है और पुष्टि करती है। एदोम की प्रगति की जाँच की जानी है जबकि इज़राइल की प्रगति की पुष्टि की जानी

है। ऐतिहासिक रूप से, इज़राइल और एदोम के बीच लंबे समय से एक-दूसरे से अलग-अलग संबंध रहे हैं।

वे अपने सामान्य वंश का पता याकूब और एसाव से लगाते हैं। वे भाई थे जो आपस में नहीं मिलते थे। हाल के इतिहास में, एदोम ने 594 में यरूशलेम में बेबीलोन विरोधी सम्मेलन में एक प्रतिनिधि भेजा था।

हमने इस पर दो बार विचार किया है, यिर्मयाह 27 की आयत 3 में, पश्चिमी राज्यों का सम्मेलन विद्रोह की योजना बना रहा है, सभी बाबुल के खिलाफ विद्रोह की योजना बना रहे हैं। हालाँकि, अंततः, एदोम ने फैसला किया कि बाबुल के दुश्मन की तुलना में उसका सहयोगी बनना अधिक सुविधाजनक था। वे बाबुल के हाथों पीड़ित नहीं होना चाहते थे, जैसा कि वास्तव में यहूदा ने किया था।

यहूदा एदोम के इस बदलाव को कभी नहीं भूला और तब से एदोम यहूदा का कट्टर दुश्मन बन गया। भजन 137 में 587 में एदोम के रवैये का विशेष उल्लेख किया गया है। भजन की 7वीं आयत में कहा गया है, हे यहोवा, यरूशलेम के पतन के दिन एदोमियों के विरुद्ध याद करो, जब उन्होंने कहा था, इसे ढा दो, इसे इसकी नींव तक ढा दो।

और फिर विलापगीत 4.22 बहुत हद तक यहजेकेल 35-36:15 के सारांश की तरह ही है, जो बहुत छोटे पैमाने पर है। विलापगीत 4:22 यही कहता है, हे बेबीलोन की बेटी, तुम्हारे अधर्म का दण्ड पूरा हो चुका है। परमेश्वर तुम्हें अब और निर्वासन में नहीं रखेगा, लेकिन हे एदोम की बेटी, तुम्हारे अधर्म का दण्ड देगा, वह तुम्हारे पापों को उजागर करेगा।

और इस खंड में भी हमारा रवैया कुछ ऐसा ही है। अध्याय 35 वास्तव में संदेशों का एक संग्रह है। यह 2-4, 5-9, 10-13 और 14-15 है।

प्रत्येक संदेश न्याय का संदेश है जो मान्यता सूत्र के साथ एक ही स्वर पर समाप्त होता है, या वस्तुतः समाप्त होता है। पद 4 में यह है, तुम जान लोगे कि मैं प्रभु हूँ। इसी प्रकार, पद 9 में यह है, तो तुम जान लोगे कि मैं प्रभु हूँ।

जबकि श्लोक 12 में इसे इस रूप में रखा गया है, "तुम्हें पता चल जाएगा कि मैं, प्रभु, ने सारी गालियाँ सुनी हैं, इत्यादि।" और यह इस प्रकार समाप्त होता है, "मैं तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा, और तब वे जान जाएँगे कि मैं प्रभु हूँ।" और इसलिए, एदोम समय के साथ अपने दुख के अनुभव से ईश्वर की दैवीय सज़ा का सबक सीखने जा रहा है।

पद 2-4 में पहला संदेश जोरदार तरीके से न्याय की घोषणा करता है, और इसमें किसी आरोप का हवाला नहीं दिया गया है। यह अध्याय की एक स्पष्ट और शक्तिशाली शुरुआत है। यहजेकेल को एदोम की दिशा में स्थिर रूप से देखने, उसके खिलाफ भविष्यवाणी करने और यह कहने के लिए कहा गया है, प्रभु परमेश्वर यों कहता है, मैं तुम्हारे विरुद्ध हूँ, सैर पर्वत।

मैं अपना हाथ तुम्हारे विरुद्ध बढ़ाऊंगा कि तुम्हें उजाड़ और उजाड़ बना दूँ। मैं तुम्हारे नगरों को उजाड़ दूँगा। तुम उजाड़ हो जाओगे, और तुम जान लोगे कि मैं यहोवा हूँ।

सीधे-सादे शब्दों में कहें तो। श्लोक 5-9 में दूसरा संदेश श्लोक 5 में दिए गए एक छोटे से आरोप से श्लोक 6-9 में दंड की एक लंबी सजा की ओर बढ़ता है। श्लोक 5 में आरोप कहता है कि क्योंकि तुमने एक प्राचीन शत्रुता को पोषित किया और इस्राएल के लोगों को उनकी विपत्ति के समय, उनके अंतिम दंड के समय तलवार की शक्ति के हवाले कर दिया,

हम देखते हैं कि आरोप की शुरुआत बड़े ही सफाई से 'क्योंकि' से की गई है, और यह अपने संकेत के साथ न्याय की ओर ले जाने वाला है, इसलिए, पद 6 में। पद 5 में यह विशेष आरोप बहुत हद तक उसी के समान है जो हमें अध्याय 25 में मिला था। यह 587 में यरूशलेम के पतन के समय एदोमियों की सक्रिय भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करता है। ओबद्याह की छोटी पुस्तक उनकी भूमिका पर एक टिप्पणी के रूप में कार्य करती है।

हमने इसे पहले भी पढ़ा है, लेकिन आइए हम इन आयतों, आयत 10-14 को याद करें, जो यहाँ 35:5 में इस विशेष आयत पर एक तरह की टिप्पणी हैं। अपने भाई याकूब के साथ किए गए वध और हिंसा के कारण, शर्म तुम्हें ढँक लेगी, और तुम हमेशा के लिए नष्ट हो जाओगे। जिस दिन तुम अलग खड़े रहे, जिस दिन अजनबियों ने उसकी संपत्ति छीन ली, और विदेशी उसके फाटकों में घुस गए और यरूशलेम के लिए चिट्ठी डाली, तुम भी उनमें से एक थे।

तुम्हें अपने भाई के दुर्भाग्य के दिन पर गर्व नहीं करना चाहिए था। तुम्हें यहूदा के लोगों के विनाश के दिन पर आनन्द नहीं करना चाहिए था। तुम्हें संकट के दिन घमंड नहीं करना चाहिए था।

तुम्हें मेरे लोगों की विपत्ति के दिन उनके फाटक में प्रवेश नहीं करना चाहिए था। तुम्हें यहूदा की विपत्ति के दिन उसकी विपत्ति पर खुशी मनाने में शामिल नहीं होना चाहिए था। तुम्हें उसकी विपत्ति के दिन उसकी संपत्ति नहीं लूटनी चाहिए थी।

तुम्हें उसके भगोड़ों को काटने के लिए चौराहों पर खड़े नहीं होना चाहिए था। तुम्हें संकट के दिन उसके बचे हुए लोगों को नहीं सौंपना चाहिए था। ऐसी ही स्थितियों की श्रृंखला है जिसका सारांश यहाँ पद 5 में दिया गया है। और यही है... कि ओबद्याह का संदर्भ एक उपयोगी व्याख्या है।

पद 5 बहुत रोचक है क्योंकि इसमें समय का दोहरा संदर्भ है। जहाँ तक एदोमियों का सवाल है, यह इस्राएल के लोगों को तलवार की शक्ति के हवाले करके एक प्राचीन शत्रुता का अंतिम उत्कर्ष था। लेकिन जहाँ तक इस्राएल का सवाल है, यह उनके अंतिम दण्ड का समय था।

हम यहोशू से लेकर राजाओं तक के महाकाव्य इतिहास के बारे में सोचते हैं, जो इस्राएल के पाप करने के लंबे इतिहास को बताता है और अंत में अंतिम दंड तक पहुँचता है, जो 587 का संदर्भ देता है। और इसलिए समय की यह बढ़ी हुई भावना है, समय की दोगुनी बढ़ी हुई भावना जो हमें पद 5 में एदोम और इस्राएल के संदर्भ में मिलती है। और हम तलवार का संदर्भ देते हैं, इस्राएल के लोगों को तलवार की शक्ति के हवाले कर दिया। इसका परिणाम रक्तपात होगा, खासकर उस क्षेत्र में जहाँ एदोम का संबंध है।

पद 6 में खून-खराबा आपका पीछा करेगा। अंततः, पद 8 में, एदोमियों में से कुछ लोग तलवार से मारे जाएँगे। और इसलिए, हमारे पास आरोप में तलवार का दोहरा संदर्भ है और उसके बाद की सज़ा में भी। और एदोमियों को वही काटना पड़ेगा जो उन्होंने बोया है।

मुझे मत्ती 26 की आयत 52 में यीशु की कही बात याद आ रही है। जो तलवार उठाते हैं, वे तलवार से ही नाश होंगे। और यही बात एदोमियों के बारे में कही गई है।

श्लोक 10 से 13 अगला संदेश देते हैं। श्लोक 10 में एक आरोप है, फिर एक छोटा सा आरोप, उसके बाद न्याय का एक लंबा मार्ग। और एक बार फिर, क्योंकि, उसके बाद, इसलिए।

क्योंकि तुमने कहा था कि ये दोनों राष्ट्र मेरे होंगे, और हम उन पर कब्ज़ा कर लेंगे। और यहाँ घमंड भरा रवैया है। एक बार जब यहूदा दृश्य से बाहर हो गया, तो उस पूरे क्षेत्र पर कब्ज़ा करने की उम्मीद थी जिस पर परमेश्वर के लोगों ने एक बार कब्ज़ा कर लिया था।

इस समय न केवल दक्षिणी राज्य बल्कि उत्तरी राज्य भी अराजकता की स्थिति में था। यह उनकी भव्य योजना है। इस आरोप की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह है कि एदोम ने बहुत से यहूदियों का फ़ायदा उठाया, और अपनी ज़मीन छोड़कर यहूदा के दक्षिणी इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया।

वे मृत सागर क्षेत्र के दक्षिण से यहूदा के दक्षिणी क्षेत्रों में चले गए। यहूदा का एक बड़ा हिस्सा एदोमियों द्वारा कब्ज़ा कर लिया गया था। यहाँ, यह एक प्रस्ताव के रूप में रखा गया है जो घमंड से सुझाव देता है कि वे पुराने उत्तरी राज्य में भी जाने की उम्मीद करते हैं।

एदोमियों ने इस क्षेत्र पर कब्ज़ा कर रखा था। हेलेनिस्टिक काल में, यहूदा के अब छोटे से हिस्से के दक्षिण में स्थित उस क्षेत्र को इदुमिया कहा जाता था। 127 ईसा पूर्व में, यहूदियों ने इदुमिया पर कब्ज़ा कर लिया, इसके निवासियों को जबरन यरूशलेम में धर्मांतरित कर दिया और इसके सभी पुरुषों का खतना करवा दिया।

हेरोदेस प्रथम, हेरोदेस महान, यहूदिया का राजा, वास्तव में एक इदुमी यहूदी था और एक मूल-जन्म वाला इस्राएली नहीं था। इस्राएल के क्षेत्र पर कब्ज़ा करने की बात पद 10 और पद 12 दोनों में दिखाई गई है। इस भव्य योजना के संदर्भ में, प्रभु ने पद 12 को यह कहते हुए सुना है, इस्राएल के पहाड़ों के विरुद्ध तुमने जो भी अपमानजनक बातें कहीं हैं, वे उजाड़ दी गई हैं, उन्हें हमें खा जाने के लिए दिया गया है।

और वे परमेश्वर के लोगों के क्षेत्र पर कब्ज़ा करने की अपनी योजना में आधे रास्ते तक पहुँच गए। लेकिन फिर, श्लोक 11 में, यह कहा गया है, हालाँकि प्रभु वहाँ था, और परमेश्वर वहाँ था, और इस स्थिति से निपटने के लिए परमेश्वर के कदम उठाने का उल्लेख है। क्योंकि यह कहा गया है कि इस्राएल के परमेश्वर ने इस कब्ज़े को देखा, प्रभु वहाँ था, और वह उस भूमि के मालिक के रूप में अपनी क्षमता में मौजूद था।

यह उसकी भूमि थी जिसे उसने इस्राएल को दे दिया था। और इसलिए, भूमि पर कब्ज़ा करने के एदोमियों के दावे अंततः परमेश्वर के विरुद्ध थे। और श्लोक 13 उस बात को स्पष्ट करता है।

तुमने मेरे विरुद्ध अपनी बड़ाई की, केवल यहूदा के विरुद्ध नहीं, बल्कि अपने मुँह से मेरे विरुद्ध। तुमने मेरे विरुद्ध बहुत सी बातें कीं, मैंने सुना। और इसलिए, यह एदोम के विरुद्ध परमेश्वर के आने वाले हस्तक्षेप को उचित ठहराता है।

और इसीलिए यहाँ पद 11 में दण्ड का वादा किया गया है। फिर, पद 14 से 15 में समापन संदेश दिया गया है। यह पद 3 और 4 में पहले संदेश में दी गई एदोम की तबाही की धमकी को प्रतिध्वनित करता है। और विशेष आरोप यहूदा के दुखद अनुभव पर एदोमियों की दुर्भावनापूर्ण खुशी है।

पद 15: जैसे तुम इस्राएल के घराने की विरासत पर आनन्दित हुए क्योंकि वह उजाड़ थी, वैसे ही मैं तुम्हारे साथ व्यवहार करूँगा। तुम उजाड़ हो जाओगे। यहाँ एक दिलचस्प शब्द है।

वह शब्द है विरासत। और यह एदोमियों के लिए एक अशुभ शब्द है क्योंकि परमेश्वर ने इस क्षेत्र को इस्राएल को अधिकार में रखने के लिए दिया था।

और एदोम को अपनी नाक घुसाने और इसे अपने कब्ज़े में लेने का कोई अधिकार नहीं था। और इसलिए, ऐसा कोई रास्ता नहीं है जिससे एदोमियों को अंततः जीत मिल सके। वास्तव में, यह आगे की ओर इशारा करता है क्योंकि हम अध्याय 36 में आते हैं।

यह पद 12 में इस्राएल के पहाड़ों के बारे में बात कर रहा है। और मेरे लोग इस्राएल तुम्हारे अधिकारी होंगे, और तुम उनकी विरासत होगे। और इसलिए वह शब्द जो 35 के अंत में दंड के उस संदेश में एदोमियों के लिए अशुभ था, वह आगे बढ़ने वाला था।

यह वास्तव में यहूदा के लिए एक वादा बन गया। यहूदा को परमेश्वर की इच्छा और परमेश्वर के उद्देश्यों के अनुसार भूमि पर अधिकार था। और अंततः वह अधिकार पुनः स्थापित किया जाएगा।

इसलिए, मुझे लगता है कि हम देख सकते हैं कि अध्याय 35 वास्तव में निर्वासितों के लिए आश्वासन का संदेश है। और जैसा कि यह बताता है कि एदोमियों ने क्या किया था और एदोमियों ने क्या किया, तो उम्मीद है कि स्थिति बदल जाएगी। लेकिन यहूदा की हानि और यहूदा के अपमान की भावना बहुत अधिक है।

इसमें एदोमियों के हाथों की गई लड़ाई का संवेदनशील चित्रण है। इसलिए, हम अध्याय 36 और श्लोक 1 से 15 की ओर मुड़ते हैं। पहली बात जो हमें इस बारे में ध्यान देने की ज़रूरत है, वह यह है कि यहजेकेल की पुस्तक की समग्र संरचना में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है।

यह इसराइल के पहाड़ों को संबोधित है। अगर हमें अच्छी याददाश्त है, तो हम यहजेकेल के अध्याय 6 को याद करते हैं, जो इसराइल के पहाड़ों को संबोधित एक संदेश था। लेकिन वह 587 से पहले का संदेश था।

और इसमें इस्राएल के उन पहाड़ों के लिए न्याय, आक्रमण और संकट की बात कही गई थी। लेकिन अब हम एक उलटफेर देख रहे हैं। अब, हम इस्राएल के उन पहाड़ों के लिए एक वादा और उम्मीद पा रहे हैं।

और इसलिए, अध्याय 6 में न्याय के उस संदेश के बाद, अध्याय 6 में इस्राएल के पहाड़ों के विरुद्ध न्याय क्यों था? खैर, यह ऊँचे स्थानों का स्थान था, जो न केवल यरूशलेम के मंदिर में परमेश्वर की उचित रूढ़िवादी पूजा के बराबर था, बल्कि छवि पूजा की अपरंपरागत विशेषताओं द्वारा भी चिह्नित था, जिसमें धार्मिक छवियों को शामिल किया गया था, जो पुराने नियम के पारंपरिक विश्वास में निषिद्ध विशेषता थी। और इसलिए परमेश्वर को भूमि को उजाड़ और बंजर बनाना पड़ा। लेकिन वह तब की बात थी, और अब हम आगे बढ़ चुके हैं।

हम 587 से आगे बढ़ चुके हैं, और अब हम वादे के क्षेत्र में हैं। लेकिन 36:1 से 15, अध्याय 6 के सकारात्मक प्रतिरूप के रूप में कार्य करते हैं। और दूर-दराज के बेबीलोन में यहजेकेल द्वारा एक बार फिर से इस्राएल के पहाड़ों को अलंकारिक रूप से संबोधित किया गया है। बेशक, यह संदेश वास्तव में निर्वासितों द्वारा सुना जाना था।

न केवल 597 के युद्ध के कैदी, बल्कि 587 के बाद निर्वासितों की आमद से भी यह संख्या बढ़ी। 6.3 में, यहजेकेल ने अपना संदेश न केवल इस्राएल के पहाड़ों तक पहुँचाया, बल्कि एक बड़ी इकाई, पहाड़ों और पहाड़ियों और घाटियों और घाटियों तक पहुँचाया। और मैंने तब सुझाव दिया कि यह एक भावनात्मक सूची थी, और इसने यहजेकेल और निर्वासितों को पुरानी यादों में खो जाने के लिए प्रेरित किया।

उस खूबसूरत भूमि पर, जिसकी भौगोलिक विविधता इतनी अधिक थी कि वे उससे बहुत प्यार करते थे और उसे संजोकर रखते थे। और वहाँ, निश्चित रूप से, उन अपरंपरागत उच्च स्थानों के प्रसार से सूची धूमिल हो गई थी। लेकिन यहाँ, अध्याय 36 में, वह भव्य सुनवाई फिर से होती है।

मैंने इसे सबसे पहले न्यू RSV में पढ़ा: इस प्रकार प्रभु पहाड़ों और पहाड़ियों, जलधाराओं और घाटियों से कहता है, और फिर श्लोक 6 में: पहाड़ों और पहाड़ियों, जलधाराओं और घाटियों से। जब आप NIV की ओर मुड़ते हैं, तो हमारे पास अध्याय 6 जैसा ही अनुवाद होता है, जिसमें जलधाराओं का नहीं बल्कि घाटियों का संदर्भ होता है।

वास्तव में, हिब्रू शब्द अध्याय 6 में समान है, और मेरा सुझाव है कि अध्याय 6 के विपरीत 36 में एक और अनुवादक था, और पर्याप्त समन्वय नहीं था क्योंकि हमें अध्याय 6 में कही गई बातों की जानबूझकर प्रतिध्वनि सुननी थी। और इसलिए अब यह दोहराव है। और अब, अध्याय 6 और 36 के बीच का वह पत्राचार स्पष्ट रूप से यहजेकेल की पुस्तक के पहले संस्करण से संबंधित था, जिसने पुस्तक को मोटे तौर पर दो हिस्सों में विभाजित किया था।

587 से पहले पैगंबर के निर्वासन-पूर्व नकारात्मक संदेश और उसके बाद 587 के बाद उनके सकारात्मक संदेश बड़े करीने से दो हिस्सों में विभाजित हैं। दूसरे संस्करण में सकारात्मक संदेशों

को पहले हिस्से में शामिल किया गया। उदाहरण के लिए, अध्याय 33 को अध्याय 3 और 18 दोनों में दोहराया गया।

और अध्याय 16 में इसने यरूशलेम की निंदा को एक सुखद अंत के साथ जारी रखा जो 587 के बाद की अवधि से संबंधित था। और अध्याय 20 में इसने कुछ ऐसा ही किया, और इसने पलायन की उस दुखद कहानी में बेबीलोन से मातृभूमि की ओर एक महान नए पलायन का वादा जोड़ा। और इसलिए, हमारे पास ये दो संस्करण हैं जिन्हें हमें यहजकेल की पुस्तक में ध्यान में रखना होगा।

लेकिन इस मामले में पुस्तक ने पहले संस्करण के क्रम को संरक्षित किया है, और हमें अध्याय 6 में न्याय की धमकी के अनुरूप दूसरे भाग में 36 का वादा मिलता है। हम पूछ सकते हैं कि अध्याय 6 में 36, 1 से 15 क्यों नहीं जोड़े गए? यह वहाँ काफी अच्छी तरह से फिट हो सकता था और पुराने और नए को मिलाने के अध्याय 16 और 20 में पैटर्न का पालन कर सकता था। खैर, मेरा सुझाव है कि अध्याय 35 के साथ 36:1 से 15 का जानबूझकर पैटर्निंग और भागीदारी 36 को अध्याय 6 के साथ जोड़ने के खिलाफ एक कारक रही होगी। दोनों खंड एक दोहरी इकाई के रूप में खड़े थे जिन्हें विभाजित नहीं किया जा सकता था। और इसलिए, पहला संस्करण यहाँ रखा गया था।

36, 1 से 15, में दिया गया संदेश दो भागों में विभाजित है: पद 1 से 12 और फिर 13 से 15। यदि हम पहले पद 1 से 12 को देखें, तो यह पद 1 से 7 में राष्ट्र के पड़ोसी यहूदा के विरुद्ध न्याय की एक लम्बी घोषणा के साथ आरम्भ होता है, और फिर यह आगे बढ़कर पद 8 से 12 में निर्वसितों के लिए उद्धार की एक छोटी सी घोषणा के साथ समाप्त होता है।

और इसलिए, 1 से 12 तक के दो भाग हैं। विषय में, हम अध्याय 35 में देखी गई स्थिति पर वापस जा रहे हैं। और हमारे पास फिर से न्याय है।

लेकिन सिर्फ एदोम के खिलाफ नहीं बल्कि एदोम समेत। और पद 5 में, जब न्याय की बात कही जाती है, तो परमेश्वर कहता है, मैं बाकी राष्ट्रों और पूरे एदोम के खिलाफ बोल रहा हूँ। और पूरे एदोम के खिलाफ।

तो, अब यह व्यापक परिप्रेक्ष्य है। लेकिन हम राष्ट्रों के विरुद्ध न्याय में वापस आ गए हैं और फिर यहूदा को दिए जाने वाले वादे, सकारात्मक वादे की ओर बढ़ रहे हैं। और न्याय से शुरू करके उद्धार की ओर बढ़ने के इस संबंध में, और उद्धार स्पष्ट रूप से एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन उद्धार को समस्या से निपटना है, और वह समस्या पिछले न्याय में बताई गई है।

एक तरह से, यह अध्याय 34 जैसा ही है, जो 1 से 10 में यहूदा के हाल के चरवाहे राजाओं के खिलाफ न्याय के साथ शुरू हुआ और फिर 11 से 16 में उद्धार के साथ समाप्त हुआ, जिसमें कहा गया कि परमेश्वर अपने अधीनस्थ चरवाहों से चरवाही की भूमिका संभालने जा रहा है, और वह अपने झुंड की चरवाही करने में खुद ही बेहतर काम करने जा रहा है। लेकिन एक ही प्रगति

है, एक बहुत बेहतर स्थिति में जाने से पहले एक बुरी स्थिति को पीछे देखना। इस मामले में, न्याय का संदेश उद्धार के वादे से ज़्यादा लंबा है।

बेशक, निर्वासितों के लिए, यह वास्तव में मुक्ति का संदेश था, क्योंकि पड़ोसी देशों द्वारा किए गए बुरे कामों का न्याय करने से, इससे निर्वासितों को खुद को सांत्वना मिली। यह निर्वासितों को आश्वासित करता है कि परमेश्वर निर्वासितों के दर्द को समझता है। वह जानता है कि पड़ोसी देशों के हाथों उन्हें क्या सहना पड़ा है।

वह उनके दुख को जानता है, वह उनके उचित दुख को जानता है, और वह इसके लिए जिम्मेदार लोगों से निपटने जा रहा है। और इसलिए, न्याय के इस संदेश में सहानुभूति का संदेश सामने आता है। यहूदा के राष्ट्रीय पड़ोसियों के खिलाफ।

जैसा कि हमने अध्याय 35 में कहा था, एदोम आने वाले प्रतिशोध का एकमात्र लक्ष्य था, लेकिन इस मामले में, यह व्यापक दृष्टिकोण है, और एदोम का उल्लेख अन्य राष्ट्रों के श्लोक 5 में इस बड़े समूह के साथ किया गया है। अध्याय 25 में, हमारे पास पड़ोसी फिलिस्तीनियों और राज्यों ने जो किया, उनका रवैया और 587 में यहूदा के खिलाफ उनकी गतिविधि की सूची थी। हमें इस बिंदु पर याद रखना चाहिए, जैसा कि मैंने पहले भी कहा है, कि दुःख के अक्सर दो पहलू होते हैं।

तथ्यात्मक, भौतिक और वस्तुगत नुकसान पर दुःख, और फिर व्यक्तिपरक अपमान, प्रतिष्ठा की हानि, इत्यादि पर दुःख। वस्तुगत हानि के बाद आने वाली भावनाएँ। आप अभी भी व्यक्तिपरक हानि की भावना से ग्रस्त हैं।

और हम पाते हैं कि आयत 1 से 7 में दुःख के दोनों पहलुओं का उल्लेख किया गया है। आयत 3 के पहले भाग में, हम यहूदा के लिए वस्तुगत नुकसान पाते हैं क्योंकि उन्होंने तुम्हें वास्तव में उजाड़ दिया और तुम्हें हर तरफ से कुचल दिया ताकि तुम बाकी राष्ट्रों के कब्जे में आ जाओ।

पद 3 के पहले भाग में यही वस्तुगत हानि थी। लेकिन हम पाते हैं कि हम वहाँ से कहाँ जाते हैं? वास्तव में, उस वस्तुगत हानि के बाद, इस संदेश का मुख्य ध्यान अपमान पर है। और इसे बार-बार सामने लाया जा रहा है। और पद 3 में, आप लोगों के बीच गपशप और बदनामी का विषय बन गए।

पद 4 में, तुम न केवल लूट का स्रोत बन गए, जो एक वस्तुगत नुकसान था, बल्कि तुम बाकी सभी राष्ट्रों के लिए उपहास का विषय बन गए। और इसलिए, इस व्यक्तिपरक नुकसान पर यह ध्यान केंद्रित होने जा रहा है। और यह पद 5 में आता है, पूरे दिल से खुशी और पूरी तरह से घृणा के साथ, एदोम ने इसे लूटने के लिए इसके चरागाह के कारण भूमि को अपने अधिकार में ले लिया।

यह वस्तुगत हानि और व्यक्तिपरक हानि का मिश्रण है, लेकिन व्यक्तिपरक हानि पर ध्यान केंद्रित किया गया है। और यह फिर से पद 6 में आता है, है न? आपने राष्ट्रों के अपमान को झेला है। और इसलिए, यह जागरूकता है कि यहूदा ने दो तरीकों से कष्ट झेले हैं: परमेश्वर की जागरूकता, वस्तुगत हानि, और उसके बाद व्यक्तिपरक हानि।

और इसलिए, वास्तव में, श्लोक 12 में, शिकायतों की एक तरह की असंबद्ध सूची है जो अव्यवस्थित तरीके से ढेर हो जाती है। और यह उस मार्ग से मेल खाता है जो दुःख अक्सर अपनाता है। यह अक्सर भटकावपूर्ण होता है, यह अक्सर अव्यवस्थित होता है, और हम दुःख के इस पहलू के बारे में सोचते हैं जो हमें परेशान करता है, हम दुःख के उस पहलू के बारे में बात करते हैं।

और जब हम शोक मनाते हैं तो हमारे मन में उलझन होती है। और इन आयतों की अद्भुत सच्चाई यह है कि परमेश्वर इस अस्पष्ट उल्लेख को अपने ऊपर ले लेता है, वस्तुनिष्ठ दुःख का यह संयोजन बार-बार इस पर वापस आता है, लेकिन इससे भी अधिक ध्यान व्यक्तिपरक दुःख पर होता है, जो फिर से कई बार आता है। और यह तथ्य कि परमेश्वर यह कह रहा है कि परमेश्वर उनके भावनात्मक दर्द को साझा करता है।

और परमेश्वर इसमें कैसे शामिल है? श्लोक 5 में इसका संकेत है। क्योंकि यह केवल निर्वासितों की भूमि नहीं थी जिसे छीन लिया गया था, बल्कि श्लोक 5 में, एदोम ने मेरी भूमि को अपने अधिकार में ले लिया। और इसलिए, परमेश्वर को अपना दुःख था, और परमेश्वर को अपना उद्देश्यपूर्ण दुःख था। उसने अपनी भूमि, या अपनी भूमि का एक हिस्सा, एदोमियों के हाथों खो दिया, क्योंकि उन्होंने यहूदा के दक्षिणी भाग के एक बड़े हिस्से पर आक्रमण किया था।

और इसलिए भगवान उनके पक्ष में है; वह उनके खिलाफ है; वह उनका सहयोगी और मित्र है। कोई कह सकता है कि वह भी इसी तरह के अनुभव से गुजरा है। और वह उन्हें दुःख और पीड़ा में नहीं रहने देगा।

तो अब हम आयत 8 से 12 के सकारात्मक संदेश की ओर मुड़ सकते हैं। आयत 8 में फिर से इस्राएल के उन पहाड़ों को संबोधित किया गया है, लेकिन अब पूरी तरह से सकारात्मक अर्थ में। आयत 8 पर विशेष रूप से ध्यान दें।

लेकिन हे इस्राएल के पहाड़ों, तुम अपनी शाखाएँ फैलाओगे और अपने फल मेरे लोगों, इस्राएल को दोगे, क्योंकि वे जल्द ही घर लौट आएंगे। ध्यान दें कि पहाड़ मेरे लोगों से जुड़े हैं। और इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर के अपने लोग वापस भूमि पर जाने वाले हैं।

जिस भूमि का वादा एक बार इस्राएलियों ने किया था और जिस पर उन्होंने कब्ज़ा किया था, वह एक बार फिर होने जा रही है। मेरे लोग। और इसलिए वह वाचा शब्द, मेरे लोग, अब इस्राएल के पहाड़ों से जुड़ा हुआ है।

और यह पक्का वादा है कि वे जल्द ही घर वापस आएंगे। अब, ऐतिहासिक रूप से यह इतना आसान नहीं था। एक ऐतिहासिक तथ्य के रूप में, 538 ईसा पूर्व में निर्वासितों में से पहले को यहूदा वापस आने में लगभग 50 साल लगने वाले थे।

और यह जेकेल के समय से बहुत दूर है। लेकिन वह कह सकता था, भगवान के नाम पर, वे जल्द ही घर लौट आएंगे। और यह मुझे प्रकाशितवाक्य की किताब की याद दिलाता है।

क्योंकि यह दूसरे आगमन के वादे के साथ शुरू और खत्म होता है, जो पाठकों, पहले पाठकों के समय में आने वाला है। और महान मसीह कहते हैं, निश्चित रूप से, मैं जल्द ही आ रहा हूँ। हम जानते हैं कि हमें कई शताब्दियों तक इंतजार करना पड़ा है, और यह अभी तक नहीं हुआ है।

लेकिन दोनों मामलों में, यहजेकेल के मामले में और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के मामले में, आध्यात्मिक आश्वासन वास्तविक घटना के तुरंत बाद वादा दिए जाने के बीच कालानुक्रमिक असमानता से अधिक महत्वपूर्ण है। आयत 9 से 11 लैव्यव्यवस्था 26 की वाचा आशीर्वाद से एक पत्ता लेते हैं। जैसा कि हम पढ़ रहे हैं, हमने देखा है कि लैव्यव्यवस्था 26 को इस पुजारी भविष्यवक्ता यहजेकेल ने अच्छी तरह से याद किया था।

और वह लैव्यव्यवस्था 26 के शापों में बुना गया है, लेकिन अब वह लैव्यव्यवस्था 26 के आशीर्वादों पर आगे बढ़ सकता है। और श्लोक 10 में, मैं तुम्हारी जनसंख्या को बढ़ाऊंगा। यह सीधे लैव्यव्यवस्था 26:9 से आता है, मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा।

लेकिन लैव्यव्यवस्था 26 के संदर्भ और उसके आशीर्वाद के वादे और यहजेकेल 36 में इस वर्तमान स्थिति में हमारे पास जो है, उसके बीच एक बड़ा अंतर है। क्योंकि लैव्यव्यवस्था 26 में, ऐसा वादा वाचा आज्ञाकारिता के तुरंत बाद आता है। यदि आप मेरी आज्ञा का पालन करते हैं, तो आपको बहुत बड़ी आशीर्षें मिलेंगी।

यहाँ, बेशक, यह इस्राएल की महान अवज्ञा के बाद आता है, जिसे पिछले अध्यायों में बताया गया था। और यहजेकेल में आज्ञाकारिता का मुद्दा केवल भविष्य की आवश्यकता और भविष्य की व्यावहारिकता के रूप में निर्धारित किया जाएगा। यह अगले भाग में उभरने वाला है, जो 36.16 में शुरू होगा। हालाँकि, वे वाचा के वादे जो आज्ञाकारिता पर निर्भर करते हैं, यहाँ शुद्ध अनुग्रह के शब्द बन गए हैं जो निर्वासन की ओर से पिछली आज्ञाकारिता को नहीं देखते हैं, बल्कि निहित रूप से, वे इस्राएल की ओर से भविष्य की प्रतिबद्धता की आशा करते हैं।

और हमें वह शब्द मिलता है... पहले अध्याय 36 में अधिकार का संदेश था। 36.2 और 5, तुम अधिकार बन गए, इस्राएल के पहाड़ बाकी इस्राएलियों के अधिकार बन गए। और फिर, एदोमियों ने भूमि को अपने अधिकार में ले लिया।

और इसके विपरीत, इसके विपरीत, हमें पद 12 में इस्राएल के लिए प्रयुक्त क्रिया 'अधिकार' मिलती है। मेरे लोग, इस्राएल तुम्हारा, इस्राएल के पहाड़ों का अधिकारी होगा। इसलिए, उन तालिकाओं को बदलना चाहिए।

और तुम उनकी विरासत बनोगे। और वादा का शब्द अध्याय 35 के अंत और श्लोक 15 से लिया गया था। ठीक है।

और फिर, पद 12 में भी, हमारे पास वह सुंदर वाक्यांश है, मेरे लोग इस्राएल। और वास्तव में, यह पद 8 में दोहराया गया है, मेरे लोग इस्राएल। और इसलिए, उद्धार का यह वादा इस वाचा शब्द, मेरे लोग इस्राएल को एक सुंदर तरीके से उठाता है।

और फिर, 36 आयतों 1 से 15 में, बहुवचन U पहाड़ों को संदर्भित करता है, यह आयत 13 से एकवचन U में बदल जाता है, संभवतः भूमि के साथ सहमत होता है। इज़राइल की भूमि, जिसका अर्थ इज़राइल के पहाड़ों से है। और कभी-कभी अध्याय 36 में पहले भी हुआ है।

और यह, वास्तव में इसका उल्लेख श्लोक 6 में किया गया था, इस्राएल की भूमि। अब इस्राएल की भूमि को संबोधित किया गया है। लेकिन एक समस्या थी जिससे निपटना था।

और यह निर्वासितों के मन में एक समस्या थी। और वापस इज़राइल जाने के बारे में बात करने में एक अड़चन थी। और वह अड़चन उस भूमि से जुड़े एक पुराने कलंक से संबंधित थी।

और वास्तव में, श्लोक 12 के अंत में इसका उल्लेख किया गया है। हे इस्राएल के पहाड़ों, तुम अब उन्हें संतानहीन नहीं करोगे। और यह वास्तव में, श्लोक 13 से भी पीछे चला जाता है।

इसमें संख्या 13 और श्लोक 22 लिया गया है। और, नहीं, यह 32 है। संख्या 13 और श्लोक 32।

और चलिए इस संदर्भ को सही से समझ लेते हैं। क्योंकि वहाँ, भूमि के अपने बच्चों से विमुख होने की बात की गई है। नहीं, यह भक्षण है, यह 32 में है।

और जो जासूस उस देश की जासूसी करने गए थे, वे वापस आए और उनमें से ज़्यादातर के पास प्रतिकूल रिपोर्ट थी। मुझे नहीं लगता कि हमें वादा किए गए देश में जाना चाहिए। और वे 31 में कहते हैं, हम इन लोगों के खिलाफ़ नहीं जा सकते क्योंकि वे हमसे ज़्यादा ताकतवर हैं।

इसलिए, उन्होंने इस्राएलियों के पास एक प्रतिकूल रिपोर्ट लाई, जिसकी उन्होंने जासूसी की थी, और कहा, जिस देश में हम जासूस के रूप में गए हैं, वह ऐसा देश है जो अपने निवासियों को निगल जाता है। और यह भावना है कि अगर हम उस देश में जाते हैं, तो हमें निगल लिया जाएगा। और यहाँ, निर्वासित लोग स्पष्ट रूप से उस पुराने पाठ को उठा रहे हैं।

और वे वादा किए गए देश में पहली बार प्रवेश करने के बारे में सोच रहे हैं। और वे पुराने कलंक के बारे में सोच रहे हैं, ओह, क्या हमें अंदर जाना चाहिए? जो लोग वहाँ हैं वे बहुत महान और शक्तिशाली हैं। और हम उनके खिलाफ़ कैसे खड़े होंगे? हम अंततः नष्ट हो जाएँगे।

और इसलिए, यह विचार यहाँ उठाया जा रहा है। अब आप उन्हें बच्चों से वंचित नहीं रखेंगे। और यही 13 से 15 तक विकसित किया गया है।

यहोवा कहता है, क्योंकि वे तुमसे कहते हैं, क्योंकि निर्वासित लोग कहते हैं, तुम लोगों को खा जाते हो, और तुम अपनी जातियों को बच्चों से वंचित कर देते हो। यह वही है जो भूमि करती है, और यह लोगों को खा जाती है। और यही वास्तविक क्रिया है जिसका उपयोग संख्या 13 और श्लोक 32 में किया गया था।

और तुम अपने राष्ट्रों को बच्चों से वंचित करते हो। और इसलिए, क्या हम उस भूमि पर वापस जाना चाहते हैं? यह सब फिर से हो सकता है। इसलिए, तुम, इस्राएल की भूमि, अब लोगों को नहीं खाओगे और अपने राष्ट्र को वंचित नहीं करोगे।

और मैं तुझे फिर कभी राष्ट्रों की निन्दा सुनने न दूंगा। फिर कभी तुझे लोगों की निन्दा सहनी न पड़ेगी। फिर कभी तू अपने राष्ट्र को ठोकर खाने न देगा, परमेश्वर यहोवा की यही वाणी है।

और इसलिए, भूमि पर जाने के विचार से प्राचीन समय में भूमि की जो बुरी प्रतिष्ठा थी, उसे यहाँ उठाया गया है। और यह डर है कि यह सब फिर से होने वाला है। क्योंकि यह हाल ही में हुआ था।

बेबीलोनियों और उनके सहयोगियों के हाथों हुए सैन्य नरसंहार। और घेराबंदी के दौरान भूख से कई लोगों की मौत, जिनमें कई बच्चे भी शामिल थे। विलाप में इसका बहुत ज़िक्र है।

तथ्य यह है कि बच्चे भूखे मर गए क्योंकि पर्याप्त भोजन नहीं था। और वे वयस्कों द्वारा उपलब्ध कराए गए बहुत कम भोजन से अपना पेट भरने के लिए पर्याप्त रूप से सक्षम नहीं थे। और इसलिए यह पुरानी कहावत 587 के अनुभव में दुखद रूप से सत्य साबित हुई।

लेकिन यहाँ, परमेश्वर औपचारिक रूप से इसे रद्द कर देता है। और कहता है कि ऐसा दोबारा नहीं होने वाला है। और यहाँ निर्वासितों की भावनात्मक चिंता को उठाया गया है।

और यहजेकेल के माध्यम से परमेश्वर को उनकी भावनाओं के प्रति सहानुभूति है। फिर, यह सहानुभूति श्लोक 15 के अंत में उल्लेख के साथ सामने आती है। मैं अब तुम्हें राष्ट्रों के अपमान को सुनने नहीं दूँगा।

अब तुम्हें लोगों का अपमान नहीं सहना पड़ेगा। और उस वस्तुगत पीड़ा के अलावा, वह व्यक्तिपरक पीड़ा भी थी - पराजित लोगों का अपमान।

लेकिन अब राष्ट्रों के पास आगे देखने के लिए कुछ सकारात्मक है, कुछ ऐसा जो उनके दुःख में पीछे देखने की जगह ले सकता है। अगली बार, हम अध्याय 36 के अगले भाग, श्लोक 16 से 38 पर आगे बढ़ेंगे।

यह डॉ. लेस्ली एलन द्वारा यहजेकेल की पुस्तक पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 17 है, एदोम का भाग्य बनाम इस्राएल का भविष्य। यहजेकेल 35:1-36.15.